

जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों एवं स्वतंत्र चिंतन की अवधारणा: समकालीन शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता और चुनौतियों का अध्ययन

डॉ. मोहम्मद काशिफ तौफ़ीक¹, अजय शंकर²

¹असिस्टेंट प्रोफेसर (टीचर एजुकेशन), चौ० चरण सिंह पी० जी० कॉलेज हेंवरा, इटावा, उत्तर प्रदेश

¹Email: kashifau83@gmail.com

²असिस्टेंट प्रोफेसर (टीचर एजुकेशन), गंजडुंडवारा पी. जी. कॉलेज गंजडुंडवारा कासगंज, उत्तर प्रदेश

Received: 05/08/2026 | Accepted: 01/09/2026 | Published: 30/09/2026

सारांश

जॉन ड्यूई का शिक्षा-दर्शन आधुनिक शैक्षिक चिंतन में ऐसी महत्वपूर्ण वैचारिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया न मानकर व्यक्ति और समाज के निरंतर विकास का माध्यम माना गया है। ड्यूई के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना है जो अपने सामाजिक परिवेश को समझ सकें, उसके साथ सक्रिय रूप से जुड़ सकें तथा आवश्यकतानुसार उसमें सुधार के लिए योगदान दे सकें। इसी कारण उन्होंने शिक्षा और लोकतंत्र के बीच गहरे संबंध को स्वीकार किया। उनके विचार में लोकतंत्र केवल शासन की एक राजनीतिक व्यवस्था नहीं, बल्कि सहयोग, सहभागिता, संवाद, पारस्परिक सम्मान और साझा उत्तरदायित्व पर आधारित जीवन-पद्धति है (Dewey, 1916)। ऐसी लोकतांत्रिक जीवन-पद्धति के विकास के लिए विद्यालय को समाज से अलग संस्था के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन के अभ्यास-स्थल के रूप में कार्य करना चाहिए।

ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में स्वतंत्र चिंतन भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वे विद्यार्थियों को पूर्वनिर्धारित विचारों को निष्क्रिय रूप से स्वीकार करने के बजाय अनुभवों, प्रश्नों और समस्याओं के आधार पर विचार करने तथा निष्कर्ष तक पहुँचने के अवसर देने के पक्षधर थे। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ड्यूई की इन दोनों अवधारणाओं का विश्लेषण करते हुए समकालीन शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता, संभावनाओं तथा व्यावहारिक चुनौतियों को समझना है।

मुख्य शब्द (Keywords) : शिक्षा-दर्शन; लोकतांत्रिक शिक्षा; लोकतांत्रिक मूल्य; स्वतंत्र चिंतन; अनुभवात्मक अधिगम; डिजिटल शिक्षा

1. भूमिका एवं अध्ययन की पृष्ठभूमि

शिक्षा को सामान्यतः व्यक्ति के ज्ञान, कौशल और व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, किंतु शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य इससे कहीं व्यापक है। शिक्षा व्यक्ति को केवल किसी व्यवसाय अथवा परीक्षा के लिए तैयार नहीं करती, बल्कि उसे सामाजिक जीवन में सक्रिय, विवेकशील और उत्तरदायी भूमिका निभाने के योग्य भी बनाती है। इसी व्यापक दृष्टिकोण के कारण शिक्षा और लोकतंत्र का संबंध आधुनिक शिक्षा-दर्शन का एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है। जॉन ड्यूई ने शिक्षा को व्यक्ति और समाज के बीच निरंतर चलने वाली अंतःक्रिया की प्रक्रिया के रूप में देखा और लोकतंत्र को शिक्षा के साथ गहराई से संबद्ध किया (Dewey, 1916)। जॉन ड्यूई (1859-1952) अमेरिकी दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और शिक्षाशास्त्री थे, जिनके विचारों ने आधुनिक प्रगतिशील शिक्षा को व्यापक रूप से प्रभावित किया। उनके शिक्षा-दर्शन में अनुभव, क्रियाशीलता, चिंतन, समस्या-समाधान, सामाजिक सहभागिता और लोकतांत्रिक जीवन जैसे तत्वों को विशेष महत्व प्राप्त है। ड्यूई के लिए विद्यालय समाज से अलग कोई संस्था नहीं था; बल्कि वह ऐसा सामाजिक परिवेश होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी सहयोग, संवाद, सहभागिता और जिम्मेदारी जैसे लोकतांत्रिक व्यवहारों को वास्तविक अनुभव के माध्यम से सीख सकें (Dewey, 1899, 1916)।

ड्यूई के शिक्षा-दर्शन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उन्होंने विद्यार्थी को निष्क्रिय ज्ञान-ग्राही के रूप में स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार वास्तविक अधिगम तब अधिक प्रभावी होता है जब विद्यार्थी अपने अनुभवों, समस्याओं और गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करता है। इस प्रक्रिया में चिंतन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। विद्यार्थी जब किसी समस्या पर प्रश्न करता है, उपलब्ध जानकारी की जाँच करता है, संभावित समाधान पर विचार करता है और अनुभव के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचता है, तब उसकी बौद्धिक क्षमता विकसित होती है। ड्यूई ने इसी प्रक्रिया को *reflective thinking* अर्थात् चिंतनशील चिंतन से जोड़ा (Dewey, 1933)।

स्वतंत्र चिंतन का प्रश्न लोकतांत्रिक समाज के संदर्भ में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। लोकतंत्र में नागरिकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सामाजिक और सार्वजनिक मुद्दों पर विचार करें, विभिन्न दृष्टिकोणों को समझें तथा तर्क और प्रमाण के आधार पर निर्णय लें। यदि शिक्षा केवल विद्यार्थियों को स्थापित तथ्यों और विचारों को याद करने तक सीमित कर देती है, तो उनमें स्वतंत्र निर्णय और आलोचनात्मक विवेक का पर्याप्त विकास नहीं हो सकता। इसके विपरीत ऐसी शिक्षा जो प्रश्न करने, संवाद करने और तर्कपूर्ण निष्कर्ष निकालने के अवसर प्रदान करती है, लोकतांत्रिक नागरिकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

समकालीन समय में इस विषय की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। डिजिटल तकनीक, इंटरनेट, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने ज्ञान तक पहुँच को अत्यंत सरल बना दिया है। आज विद्यार्थी के सामने सूचना की कमी नहीं, बल्कि सूचना की विश्वसनीयता, प्रासंगिकता और सत्यता का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है। ऐसे वातावरण में स्वतंत्र चिंतन का अर्थ केवल अपनी राय व्यक्त करना नहीं है, बल्कि उपलब्ध सूचनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना, स्रोतों की विश्वसनीयता को समझना और प्रमाण के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचना भी है। इस दृष्टि से ड्यूई का चिंतनशील चिंतन वर्तमान डिजिटल शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करता है।

इसी प्रकार आज शिक्षा में लोकतांत्रिक मूल्यों का महत्व भी बढ़ा है। समानता, स्वतंत्रता, सहभागिता, सहिष्णुता, संवाद, सामाजिक उत्तरदायित्व और विविध विचारों का सम्मान लोकतांत्रिक समाज की आधारभूत आवश्यकताएँ हैं। विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान इन मूल्यों के विकास के लिए महत्वपूर्ण स्थान हो सकते हैं। ड्यूई के अनुसार लोकतंत्र केवल शासन की राजनीतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह सामाजिक जीवन जीने का एक तरीका भी है जिसमें व्यक्ति दूसरों के साथ सहयोग करते हुए अपने अनुभवों और विचारों को साझा करता है (Dewey, 1916)।

भारतीय संदर्भ में भी ड्यूई की अवधारणाओं को समकालीन शिक्षा के साथ जोड़कर देखना उपयोगी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आलोचनात्मक चिंतन, अनुभवात्मक अधिगम, समस्या-समाधान, समग्र विकास और विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा पर बल दिया गया है (Ministry of Education, 2020)। ये प्राथमिकताएँ प्रत्यक्ष रूप से ड्यूई के पूरे दर्शन की पुनरावृत्ति नहीं हैं, फिर भी उनके बीच वैचारिक साम्य दिखाई देता है। विशेष रूप से ऐसी शिक्षा की आवश्यकता, जिसमें विद्यार्थी केवल जानकारी प्राप्त न करे बल्कि उसका विश्लेषण, प्रयोग और मूल्यांकन भी करे, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुकी है।

हालाँकि ड्यूई के विचारों को वर्तमान परिस्थितियों में लागू करना पूरी तरह सरल नहीं है। परीक्षा-केंद्रित शिक्षा, पाठ्यक्रम का दबाव, बड़ी कक्षाएँ, संसाधनों की असमानता, शिक्षक-प्रशिक्षण की सीमाएँ और डिजिटल माध्यमों में उपलब्ध भ्रामक सूचनाएँ स्वतंत्र चिंतन तथा लोकतांत्रिक शिक्षा के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। इसलिए ड्यूई के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन केवल उनके विचारों की प्रशंसा तक सीमित न रहकर उनकी उपयोगिता और सीमाओं के आलोचनात्मक विश्लेषण पर आधारित होना चाहिए।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन का केंद्र जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों और स्वतंत्र चिंतन की अवधारणाओं को समझना तथा समकालीन शिक्षा के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता और चुनौतियों का विश्लेषण करना है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि ड्यूई की शिक्षा-दृष्टि आज के विद्यार्थी को केवल ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति बनाने के बजाय उसे प्रश्न करने वाला, तर्क करने वाला, संवाद करने वाला और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाने में किस प्रकार सहायक हो सकती है।

अतः ड्यूई के शिक्षा-दर्शन का समकालीन पुनर्पाठ इस प्रश्न के संदर्भ में विशेष महत्व रखता है कि आज की शिक्षा विद्यार्थियों को केवल “जानने” के लिए तैयार कर रही है या उन्हें “सोचने, प्रश्न करने और जिम्मेदारीपूर्वक निर्णय लेने” के लिए भी सक्षम बना रही है। यही प्रश्न लोकतांत्रिक मूल्यों और स्वतंत्र चिंतन के बीच संबंध को समझने के लिए इस अध्ययन का केंद्रीय आधार बनता है।

2. जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन की मूल अवधारणा

जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन का आधार प्रयोगवाद, अनुभव, क्रियाशीलता और सामाजिक सहभागिता है। उन्होंने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान अथवा भविष्य के जीवन की तैयारी के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि इसे स्वयं जीवन की एक सतत प्रक्रिया माना। उनके अनुसार व्यक्ति अपने परिवेश के साथ निरंतर अंतःक्रिया करते हुए सीखता है और इस प्रक्रिया में उसके अनुभव, विचार तथा व्यवहार विकसित होते हैं (Dewey, 1916)। इसलिए शिक्षा को जीवन से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

ड्यूई के अनुसार विद्यार्थी शिक्षा प्रक्रिया का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं, बल्कि सक्रिय सहभागी होना चाहिए। उसकी रुचि, अनुभव, जिज्ञासा और समस्याओं को अधिगम की प्रक्रिया से जोड़ा जाना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण में शिक्षक की भूमिका केवल जानकारी प्रदान करने वाले व्यक्ति की नहीं, बल्कि ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित करने वाले मार्गदर्शक की होती है जिनमें विद्यार्थी स्वयं खोज, प्रयोग और चिंतन के माध्यम से सीख सके। ड्यूई ने विद्यालय को समाज का एक लघु रूप माना, जहाँ विद्यार्थी सहयोग, सहभागिता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सामूहिक जीवन के व्यवहारों को वास्तविक अनुभवों के माध्यम से सीख सकता है (Dewey, 1899)।

ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में अनुभव का विशेष महत्व है, लेकिन उन्होंने प्रत्येक अनुभव को स्वतः शिक्षाप्रद नहीं माना। किसी अनुभव का शैक्षिक महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि वह व्यक्ति के आगे के अनुभवों और सीखने को किस प्रकार प्रभावित करता है। इसलिए अनुभव के साथ चिंतन और उसके परिणामों की समझ आवश्यक है (Dewey, 1938)। यही कारण है कि ड्यूई की शिक्षा-दृष्टि गतिविधि मात्र पर आधारित न होकर अनुभव, चिंतन और समस्या-समाधान के परस्पर संबंध पर आधारित है।

ड्यूई ज्ञान को स्थिर और अंतिम सत्य के रूप में देखने के बजाय उसे अनुभव एवं जाँच की निरंतर प्रक्रिया से जोड़ते हैं। जब विद्यार्थी किसी समस्या का सामना करता है, तो वह उसके कारणों को समझने, संभावित समाधानों पर विचार करने और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया स्वतंत्र और चिंतनशील व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है (Dewey, 1933)। इस प्रकार ड्यूई के शिक्षा-दर्शन की मूल अवधारणा अनुभव, सक्रिय अधिगम, सामाजिक सहभागिता, चिंतन और लोकतांत्रिक जीवन के परस्पर संबंध पर आधारित है।

3. चिंतनशील चिंतन एवं स्वतंत्र चिंतन

जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में चिंतनशील चिंतन व्यक्ति के बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। उनके अनुसार केवल किसी विचार को स्वीकार कर लेना चिंतन नहीं है; चिंतन तब सार्थक होता है जब व्यक्ति किसी विश्वास, समस्या या धारणा के आधारों और संभावित परिणामों की व्यवस्थित जाँच करता है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति प्रश्न करता है, प्रमाणों की खोज करता है, संभावित व्याख्याओं पर विचार करता है और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचता है (Dewey, 1933)। इस प्रकार चिंतनशील चिंतन व्यक्ति को किसी सूचना या विचार को बिना जाँच के स्वीकार करने के बजाय उसके औचित्य पर विचार करना सिखाता है।

स्वतंत्र चिंतन इसी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण परिणाम है। स्वतंत्र चिंतन का अर्थ प्रत्येक स्थापित विचार का विरोध करना नहीं, बल्कि किसी विचार को स्वीकार या अस्वीकार करने से पहले तर्क, प्रमाण और परिस्थितियों का मूल्यांकन करना है। शिक्षा में इसका विकास तब संभव है जब विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, अपनी राय व्यक्त करने, विभिन्न दृष्टिकोणों की तुलना करने और अपने निष्कर्ष के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करने के अवसर मिलें। आलोचनात्मक चिंतन के संदर्भ में भी तर्क, प्रमाण और निर्णय की गुणवत्ता को महत्वपूर्ण माना गया है (Ennis, 1985)।

कक्षा में समस्या-आधारित अधिगम, चर्चा, वाद-विवाद, परियोजना कार्य और inquiry-based activities विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सोचने के अवसर प्रदान कर सकती हैं। ऐसी शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक विद्यार्थियों को तैयार उत्तर देने के बजाय प्रश्नों और प्रमाणों के माध्यम से समाधान खोजने के लिए प्रेरित करता है। इससे विद्यार्थी केवल विषयगत जानकारी प्राप्त नहीं करता, बल्कि जानकारी का विश्लेषण और उसका उपयोग करना भी सीखता है।

समकालीन डिजिटल वातावरण में ड्यूई के चिंतनशील चिंतन की उपयोगिता और बढ़ गई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थियों को अत्यधिक मात्रा में सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, लेकिन प्रत्येक सूचना विश्वसनीय हो, यह आवश्यक नहीं है। इसलिए विद्यार्थियों में स्रोत की विश्वसनीयता जाँचने, तथ्य और मत में अंतर करने तथा प्रमाण के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना आवश्यक है। इसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्राप्त सामग्री को भी बिना सत्यापन स्वीकार करने के बजाय उसका आलोचनात्मक परीक्षण किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से ड्यूई का चिंतनशील चिंतन वर्तमान शिक्षा में स्वतंत्र, विवेकपूर्ण और उत्तरदायी चिंतन के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

4. लोकतंत्र, शिक्षा एवं लोकतांत्रिक मूल्य

जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में लोकतंत्र और शिक्षा का संबंध अत्यंत गहरा है। उनके लिए लोकतंत्र केवल राजनीतिक शासन की व्यवस्था नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन जीने की एक पद्धति है। लोकतांत्रिक समाज को ऐसे नागरिकों की आवश्यकता होती है जो स्वतंत्र रूप से विचार कर सकें, दूसरों के विचारों को समझ सकें, संवाद कर सकें और सामूहिक निर्णयों में जिम्मेदारीपूर्वक भाग ले सकें। ड्यूई ने शिक्षा को इन क्षमताओं के विकास का महत्वपूर्ण माध्यम माना (Dewey, 1916)।

ड्यूई के अनुसार विद्यालय लोकतांत्रिक जीवन का प्रारंभिक अभ्यास-स्थल होना चाहिए। विद्यार्थियों को यदि केवल निर्देशों का पालन करने और निर्धारित उत्तर याद करने तक सीमित रखा जाता है, तो उनमें लोकतांत्रिक व्यवहार का पर्याप्त विकास नहीं हो सकता। इसके विपरीत समूह कार्य, चर्चा, सहयोग, सामूहिक समस्या-समाधान और विचार-विनिमय जैसी प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में सहभागिता, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकती हैं (Dewey, 1899)। लोकतांत्रिक शिक्षा का उद्देश्य केवल लोकतंत्र के बारे में जानकारी देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक व्यवहार का अनुभव प्रदान करना है।

शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्रता, समानता, सहयोग, सहिष्णुता, सम्मान, सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को विकसित किया जा सकता है। इन मूल्यों को केवल पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पढ़ाना पर्याप्त नहीं है; विद्यालय का वातावरण भी इन मूल्यों के अनुरूप होना चाहिए। विद्यार्थी को अपनी बात रखने के साथ-साथ दूसरों की बात सुनने, असहमति का सम्मान करने और सामूहिक हित को समझने का अवसर मिलना चाहिए। लोकतांत्रिक शिक्षा पर समकालीन विमर्श भी शिक्षा को नागरिक सहभागिता और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास से जोड़ता है (Biesta, 2007; Gutmann, 1999)।

भारतीय संदर्भ में भी लोकतांत्रिक और सहभागी शिक्षा का महत्व स्पष्ट है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आलोचनात्मक चिंतन, अनुभवात्मक अधिगम, समग्र विकास, रचनात्मकता और जिम्मेदार नागरिकता से संबंधित उद्देश्यों पर बल दिया गया है (Ministry of Education, 2020)। इस दृष्टि से ड्यूई की लोकतांत्रिक शिक्षा की अवधारणा वर्तमान भारतीय शिक्षा के लिए एक उपयोगी वैचारिक आधार प्रदान करती है। अतः शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का माध्यम न मानकर सामाजिक और लोकतांत्रिक जीवन के विकास का साधन बनाना ड्यूई के शिक्षा-दर्शन की प्रमुख विशेषता है।

5. स्वतंत्र चिंतन और लोकतांत्रिक शिक्षा का अंतर्संबंध

जॉन ड्यूई के दर्शन में स्वतंत्र चिंतन और लोकतांत्रिक शिक्षा परस्पर पूरक अवधारणाएँ हैं। लोकतांत्रिक शिक्षा विद्यार्थी को विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, दूसरों के विचार सुनने और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान करती है, जबकि स्वतंत्र चिंतन उसे इन विचारों और सूचनाओं का तर्क एवं प्रमाण के आधार पर मूल्यांकन करने की क्षमता देता है। इस प्रकार दोनों मिलकर विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक के निर्माण की आधारभूमि तैयार करते हैं (Dewey, 1916)।

लोकतांत्रिक समाज में नागरिकों को अनेक सामाजिक, नैतिक और सार्वजनिक प्रश्नों पर निर्णय लेना पड़ता है। यदि व्यक्ति किसी सूचना या विचार को बिना जाँच के स्वीकार करता है, तो उसकी निर्णय-क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसलिए लोकतंत्र के लिए स्वतंत्र और आलोचनात्मक चिंतन आवश्यक है। ड्यूई के अनुसार शिक्षा को विद्यार्थियों में ऐसी बौद्धिक आदतों का विकास करना चाहिए जो उन्हें परिस्थितियों को समझने, प्रश्न करने और विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाएँ (Dewey, 1933)।

स्वतंत्र चिंतन के विकास के लिए कक्षा का वातावरण भी लोकतांत्रिक होना आवश्यक है। यदि शिक्षक की बात को अंतिम सत्य मानकर विद्यार्थियों के प्रश्नों या असहमति को हतोत्साहित किया जाता है, तो स्वतंत्र चिंतन के विकास की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं। इसके विपरीत खुला संवाद, विचारों का आदान-प्रदान और असहमति के प्रति सम्मान विद्यार्थियों को अपने विचारों को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने तथा दूसरों के दृष्टिकोण को समझने का अवसर देता है (Biesta, 2011)।

वर्तमान डिजिटल युग में यह अंतर्संबंध और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। सोशल मीडिया, इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने सूचना तक पहुँच को सरल बनाया है, लेकिन साथ ही गलत सूचना और अप्रमाणित दावों की संभावना भी बढ़ाई है। इसलिए लोकतांत्रिक शिक्षा को विद्यार्थियों में सूचना की जाँच, स्रोतों की विश्वसनीयता का मूल्यांकन और विभिन्न दृष्टिकोणों की तुलना करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। इस प्रकार स्वतंत्र चिंतन केवल व्यक्तिगत बौद्धिक विकास का साधन नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक समाज में जिम्मेदार सहभागिता की आवश्यक शर्त भी है।

अतः ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में लोकतांत्रिक शिक्षा स्वतंत्र चिंतन के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करती है और स्वतंत्र चिंतन लोकतांत्रिक जीवन को विवेकपूर्ण एवं उत्तरदायी बनाता है। दोनों का यह अंतर्संबंध समकालीन शिक्षा को अधिक संवादात्मक, सहभागी और लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

6. समकालीन शिक्षा में ड्यूई के विचारों की प्रासंगिकता

जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन की प्रासंगिकता वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में इसलिए बनी हुई है क्योंकि आज शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में समस्या-समाधान, चिंतन, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी क्षमताओं का विकास करना भी है। ड्यूई ने शिक्षा को अनुभव और सक्रिय सहभागिता से जोड़ते हुए विद्यार्थी को अधिगम प्रक्रिया का सक्रिय भाग माना था (Dewey, 1916)।

6.1 विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा

आज विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा पर बढ़ता जोर ड्यूई के विचारों से साम्य रखता है। विद्यार्थी की रुचि, अनुभव और सक्रिय सहभागिता को महत्व देने से वह केवल जानकारी प्राप्त करने वाला न रहकर अपने ज्ञान के निर्माण में भागीदार बनता है।

6.2 अनुभवात्मक एवं क्रियात्मक अधिगम

ड्यूई के अनुसार अनुभव तभी शिक्षाप्रद बनता है जब वह आगे के अधिगम को प्रभावित करे (Dewey, 1938)। वर्तमान शिक्षा में परियोजना कार्य, प्रयोग, field work, case study और problem-based learning जैसी विधियाँ इसी व्यापक दृष्टिकोण से संबंधित हैं।

6.3 आलोचनात्मक एवं स्वतंत्र चिंतन

सूचना और डिजिटल माध्यमों की व्यापक उपलब्धता ने विद्यार्थियों के लिए स्वतंत्र एवं आलोचनात्मक चिंतन को और आवश्यक बना दिया है। किसी सूचना को केवल इसलिए स्वीकार करना उचित नहीं है कि वह इंटरनेट या सोशल मीडिया पर उपलब्ध है। स्रोत की विश्वसनीयता और प्रमाण की जाँच आवश्यक है। ड्यूई का reflective thinking इस प्रकार की बौद्धिक प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है (Dewey, 1933)।

6.4 लोकतांत्रिक नागरिकता

वर्तमान शिक्षा में समानता, सहभागिता, संवाद और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक है। ड्यूई की दृष्टि में शिक्षा लोकतांत्रिक जीवन की तैयारी मात्र नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक जीवन का अभ्यास भी है (Dewey, 1916)। इस दृष्टि से उनकी विचारधारा आज भी नागरिक शिक्षा के लिए उपयोगी है।

6.5 भारतीय शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समग्र विकास, आलोचनात्मक चिंतन, अनुभवात्मक अधिगम, रचनात्मकता और समस्या-समाधान जैसी क्षमताओं पर बल दिया गया है (Ministry of Education, 2020)। इन प्राथमिकताओं में ड्यूई के शिक्षा-दर्शन के साथ स्पष्ट वैचारिक साम्य दिखाई देता है। इसलिए भारतीय शिक्षा के समकालीन पुनर्गठन में ड्यूई के विचार उपयोगी संदर्भ प्रदान कर सकते हैं।

7. समकालीन शिक्षा के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

ड्यूई के लोकतांत्रिक और चिंतनशील शिक्षा-दर्शन की उपयोगिता के बावजूद वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में इसके प्रभावी क्रियान्वयन के सामने कई चुनौतियाँ हैं।

सबसे प्रमुख चुनौती परीक्षा-केंद्रित शिक्षा है। जब शिक्षण का मुख्य उद्देश्य परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करना बन जाता है, तब रचनात्मकता, प्रश्न पूछने और स्वतंत्र चिंतन के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। इसी प्रकार अत्यधिक पाठ्यक्रम, बड़ी कक्षाएँ और समय का दबाव भी गतिविधि एवं संवाद आधारित शिक्षा को सीमित कर सकते हैं।

दूसरी चुनौती शिक्षक की भूमिका और प्रशिक्षण से संबंधित है। लोकतांत्रिक एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा के लिए शिक्षक को केवल विषय-विशेषज्ञ होने के साथ-साथ discussion facilitator और learning guide की भूमिका निभाने में सक्षम होना आवश्यक है।

तीसरी महत्वपूर्ण चुनौती डिजिटल सूचना की विश्वसनीयता है। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर गलत अथवा भ्रामक सूचनाओं की उपलब्धता विद्यार्थियों के निर्णय को प्रभावित कर सकती है। इसलिए डिजिटल साक्षरता के साथ आलोचनात्मक चिंतन आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग ने एक नई चुनौती प्रस्तुत की है। यदि विद्यार्थी AI से प्राप्त उत्तरों को बिना जाँच के स्वीकार करते हैं, तो स्वतंत्र चिंतन कमजोर हो सकता है। इसलिए तकनीक का प्रयोग विचार-प्रतिस्थापन के बजाय विचार-विस्तार के साधन के रूप में किया जाना चाहिए।

8. आलोचनात्मक विमर्श

ड्यूई का शिक्षा-दर्शन आधुनिक शिक्षा के लिए अत्यंत प्रभावशाली रहा है, लेकिन इसकी आलोचनात्मक समीक्षा भी आवश्यक है। उनका अनुभवात्मक और विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक सक्रिय एवं जीवन-संबद्ध बनाता है, किंतु केवल अनुभव को पर्याप्त मान लेना उचित नहीं होगा। अनुभव की शैक्षिक उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि उसे उचित मार्गदर्शन और चिंतन से कैसे जोड़ा जाता है (Dewey, 1938)।

इसी प्रकार लोकतांत्रिक शिक्षा में सभी विद्यार्थियों को समान रूप से बोलने और सहभागिता करने का अवसर देना आवश्यक है, लेकिन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताएँ इस सहभागिता को प्रभावित कर सकती हैं। अतः लोकतांत्रिक शिक्षा के लिए केवल खुला वातावरण पर्याप्त नहीं, बल्कि समान अवसर और समावेशी व्यवस्था भी आवश्यक है।

समकालीन शिक्षा में ड्यूई की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि आज का शिक्षण वातावरण उनके समय की तुलना में अत्यधिक तकनीकी और वैश्विक हो चुका है। फिर भी अनुभव, चिंतन, संवाद, समस्या-समाधान और लोकतांत्रिक सहभागिता जैसे उनके मूल सिद्धांत आज भी उपयोगी बने हुए हैं। यही उनकी विचारधारा की स्थायी शक्ति है।

9. शैक्षिक निहितार्थ

ड्यूई के विचारों के आधार पर समकालीन शिक्षा में कुछ महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं। शिक्षण को अधिक विद्यार्थी-केंद्रित, अनुभवात्मक, संवादात्मक और समस्या-आधारित बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक आधारित ज्ञान देने के बजाय वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ना आवश्यक है।

कक्षा में प्रश्नोत्तर, समूह चर्चा, वाद-विवाद, परियोजना कार्य और समस्या-समाधान जैसी गतिविधियों का प्रयोग स्वतंत्र चिंतन को बढ़ावा दे सकता है। शिक्षक को विद्यार्थियों के विचारों को केवल सही या गलत घोषित करने के बजाय उनसे उनके विचारों के आधार और प्रमाण पूछने चाहिए।

इसके साथ ही मूल्यांकन प्रणाली में भी केवल स्मृति-आधारित प्रश्नों के स्थान पर विश्लेषण, तर्क, अनुप्रयोग और समस्या-समाधान को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। डिजिटल और AI आधारित संसाधनों के प्रयोग में भी तथ्य-जाँच तथा स्रोत-मूल्यांकन को अधिगम का हिस्सा बनाया जाना आवश्यक है।

10. निष्कर्ष

जॉन ड्यूई का शिक्षा-दर्शन शिक्षा को जीवन, अनुभव, चिंतन और सामाजिक सहभागिता से जोड़ता है। उनके लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार करना नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्तित्व का विकास करना है जो परिस्थितियों को समझ सके, प्रश्न कर सके, तर्कपूर्ण निर्णय ले सके और समाज में उत्तरदायित्वपूर्वक सहभागिता कर सके।

ड्यूई की लोकतांत्रिक शिक्षा की अवधारणा और स्वतंत्र चिंतन का विचार एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। लोकतांत्रिक वातावरण विद्यार्थी को विचार व्यक्त करने और विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित होने का अवसर देता है, जबकि स्वतंत्र चिंतन उसे इन विचारों का तर्कपूर्ण मूल्यांकन करने की क्षमता प्रदान करता है। इस प्रकार दोनों मिलकर विवेकशील एवं उत्तरदायी नागरिकता की आधारभूमि तैयार करते हैं।

समकालीन डिजिटल एवं तकनीकी परिवेश में ड्यूई की प्रासंगिकता और अधिक स्पष्ट होती है। सूचना की अधिकता, सोशल मीडिया, गलत सूचना और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दौर में विद्यार्थियों को केवल सूचना प्राप्त करना नहीं, बल्कि उसकी विश्वसनीयता जाँचना और उसके आधार पर विवेकपूर्ण निर्णय लेना सीखना आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आलोचनात्मक चिंतन, अनुभवात्मक अधिगम और समग्र विकास पर दिया गया जोर भी इन उद्देश्यों के साथ पर्याप्त वैचारिक साम्य रखता है (Ministry of Education, 2020)।

अतः ड्यूई के शिक्षा-दर्शन को आज ज्यों का त्यों लागू करने के बजाय उसके मूल सिद्धांतों—अनुभव, चिंतन, स्वतंत्रता, संवाद, सहभागिता और लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व—को वर्तमान सामाजिक एवं तकनीकी परिस्थितियों के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित करना अधिक उपयोगी होगा। यही दृष्टिकोण समकालीन शिक्षा को अधिक मानवीय, लोकतांत्रिक और चिंतनशील बनाने में योगदान दे सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1]. Apple, M. W. (2012). Can education change society? Routledge.
- [2]. Biesta, G. J. J. (2007). Education and the democratic person: Towards a political understanding of democratic education. *Teachers College Record*, 109(3), 563–580.
- [3]. Biesta, G. J. J. (2011). Learning democracy in school and society: Education, lifelong learning, and the politics of citizenship. Sense Publishers.
- [4]. Carr, W., & Kemmis, S. (1986). *Becoming critical: Education, knowledge and action research*. Falmer Press.
- [5]. Dewey, J. (1899). *The school and society*. University of Chicago Press.
- [6]. Dewey, J. (1910). *How we think*. D. C. Heath & Co.
- [7]. Dewey, J. (1916). *Democracy and education: An introduction to the philosophy of education*. Macmillan.
- [8]. Dewey, J. (1922). *Human nature and conduct: An introduction to social psychology*. Henry Holt and Company.
- [9]. Dewey, J. (1927). *The public and its problems*. Henry Holt and Company.
- [10]. Dewey, J. (1933). *How we think: A restatement of the relation of reflective thinking to the educative process*. D. C. Heath & Co.
- [11]. Dewey, J. (1938). *Experience and education*. Macmillan.
- [12]. Ennis, R. H. (1985). A logical basis for measuring critical thinking skills. *Educational Leadership*, 43(2), 44–48.
- [13]. Freire, P. (2000). *Pedagogy of the oppressed* (30th anniversary ed.). Continuum. (Original work published 1970)
- [14]. Gutmann, A. (1999). *Democratic education* (Rev. ed.). Princeton University Press.
- [15]. Hyslop-Margison, E. J., & Sears, A. M. (2006). *Neo-liberalism, globalization and human capital learning: Reclaiming education for democratic citizenship*. Springer.
- [16]. Kolb, D. A. (1984). *Experiential learning: Experience as the source of learning and development*. Prentice Hall.
- [17]. Ministry of Education. (2020). *National education policy 2020*. Government of India.
- [18]. Noddings, N. (2013). *Education and democracy in the 21st century*. Teachers College Press.
- [19]. Parker, W. C. (2003). *Teaching democracy: Unity and diversity in public life*. Teachers College Press.
- [20]. Putnam, R. D. (2000). *Bowling alone: The collapse and revival of American community*. Simon & Schuster.
- [21]. Rorty, R. (1998). *Achieving our country: Leftist thought in twentieth-century America*. Harvard University Press.
- [22]. Siegel, H. (1988). *Educating reason: Rationality, critical thinking, and education*. Routledge.
- [23]. Tishman, S., Perkins, D. N., & Jay, E. (1995). *The thinking classroom: Learning and teaching in a culture of thinking*. Allyn & Bacon.
- [24]. UNESCO. (2021). *Reimagining our futures together: A new social contract for education*. UNESCO.
- [25]. Westbrook, R. B. (1991). *John Dewey and American democracy*. Cornell University Press.

Cite this Article:

डॉ. मोहम्मद काशिफ तौफ़ीक, अजय शंकर (2026). जॉन ड्यूई के शिक्षा-दर्शन में लोकतांत्रिक मूल्यों एवं स्वतंत्र चिंतन की अवधारणा: समकालीन शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता और चुनौतियों का अध्ययन. *Chaitanya Samvad Interdisciplinary Journal of Research*, 2(3), 41–47.

Doi: <https://doi.org/10.65250/chaitanyasamvad.v2i3.6>

Journal URL: <https://chaitanyasamvad.com/>



This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

Disclaimer/Publisher's Note: The opinions, interpretations, and information presented in this article are the sole responsibility of the author(s). The publisher and editorial team shall not be held responsible for any inaccuracies, copyright-related concerns, legal claims, or consequences resulting from the publication or use of this content.